[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1916 D Your Roll No...............

Unique Paper Code : 213681

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Sanskrit Discipline Centered Course – II**

Name of the Paper : Sanskrit Literature

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. **All** questions are compulsory.
3. Unless otherwise required in a question, answers should be written in Sanskrit or in Hindi or in English; but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।
3. अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिये, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का अनुवाद कीजिए : (4×2)

Translate any **two** of the following :

(क) अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिता: ।।

(ख) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।

P.T.O.

(ग) कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेता ।

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ।।

(घ) अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि ।

ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ।।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (6×2)

Explain any **two** of the following with reference to the context :

(क) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।

(ख) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

(ग) यथा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।

(घ) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।।

3. गीता के द्वितीय अध्याय के अनुसार ज्ञानयोग का वर्णन कीजिए । (10)

Explain 'ज्ञानयोग' on the basis of second chapter of Gita.

अथवा / OR

गीता के द्वितीय अध्याय का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

Write summary of second chapter of Gita in your own words.

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का अनुवाद कीजिए : (4×2)

Translate any **two** of the following :

(क) कस्यार्थः कलशेन को मृगयते वासो यथानिश्चितं

दीक्षां पारित्वान् किमिच्छति पुनर्देयं गुरोर्यद् भवेत् ।

आत्मानुग्रहमिच्छतीह नृपजा धर्माभिरामप्रिया

यद् यस्यास्ति समीप्सितं वदतु तत्कस्याद्य किं दीयताम् ।।

(ख) अनाहारे तुल्यः प्रततरुदितक्षामवदनः

शरीरे संस्कारं नृपतिसमदुःखं परिवहन् ।

दिवा वा रात्रौ वा परिचरति यत्नैर्नरपतिं

नृपः प्राणान् सद्यस्त्यजति यदि तस्याप्युपरमः ।।

(ग) प्रच्छाद्य राजमहिषीं नृपतेर्हितार्थं कामं मया कृतमिदं हितमित्यवेक्ष्य ।

सिद्धेऽपि नाम मम कर्मणि पार्थिवोऽसौ किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशङ्कितं मे ।।

(घ) स्मराम्यवन्त्याधिपतेः सुतायाः प्रस्थानकाले स्वजनं स्मरन्त्याः ।

वाष्पं प्रवृत्तं नयनान्तलग्नं स्नेहान्ममैवोरसि पातयन्त्या ।।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (6×2)

Explain any **two** of the following with reference to the context :

(क) प्राणी प्राप्य रुजा पुनर्न शयनं शीघ्रं स्वयं मुञ्चति ।

(ख) तस्मिन्सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः ।

(ग) प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते ।

(घ) चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः ।

6. स्वप्नवासवदत्तम् के आधार पर पद्मावती का चरित्र-चित्रण कीजिए । (10)

Sketch the character of 'पद्मावती' of Svapnavasavadattam.

अथवा / OR

भास के नाटकों की विशेषताएँ बताइए।

Explain the characteristic of plays of Bhasa.

7. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन का सन्धि-विच्छेद कीजिए : (3×2½)

Disjoin Sandhi in any **three** of the following :

खल्वस्या:, पुनर्देयम्, अत्रोपविशाम:, वाक्यान्युत्क्रम्य, दग्धापि, अधिकारस्ते, गुणतश्च

8. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन रेखाङ्कित शब्दों में विभक्ति निर्देश कीजिए : (3×2½)

Name the case-endings in any **three** of the following :

(i) मा फलेषु कदाचन।

(ii) गच्छतु भवान् पुनर्दर्शनाया।

(iii) आर्यपुत्रेण विरहोत्कण्ठिता भवामि।

(iv) समुद्रगृहके शय्यास्तीर्णा।

(v) तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।

(vi) चतुःशालं प्रविशाव:।